बकरी पालन - भूमिहीन/सीमान्त किसानों की आय का उत्तम स्रोत

डा० आलोक कुमार

सहायक प्राध्यापक एवं कनीय वैज्ञानिक, मादा पशुरोग विज्ञान विभाग

बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय (बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय)

बकरी पालन प्राचीन काल से सीमान्त एवं भूमिहीन किसानो की आय का प्रमुख स्रोत रहा है। हमारे देश में ग्रामीण ही नहीं अपितु कस्बों व शहरी क्षेत्रों में भी घर के पिछवाड़े में बकरी पालन किया जाता रहा है। हाल ही के दिनों में डेंगू व चिकनगुनिया जैसे घातक रोगो में बकरी के दूध के लाभ के प्रकाश में आने के उपरांत इसका पालन अत्यधिक तेजी से प्रचलित हुआ है। बकरी के दूध के असंख्य फायदे, मांस के लिए इसके उपयोग, चरम जलवायु में भी जीवित रहने, उच्च रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं दूसरे पशुओ की तुलना में कम प्रबंधन लागत, साल में दो बार बच्चे देने की क्षमता, अधिकांश नस्लों में जुड़वाँ या तीन बच्चे देने की विशेषताएं, इत्यादि गुण बकरी पालन को अधिक फायदेमंद बनाते है। आंकड़ों के अनुसार बकरियों की संख्या के मामले में भारत विश्व में दूसरे स्थान पर आता है परन्तु बकरी पालन को उद्योग की भाँति विकसित करने तथा अधिकाधिक लाभ कमाने के लिए हमें वैज्ञानिक पद्धति से इनका पालन एवं प्रबंधन करना चाहिए। वैज्ञानिक पद्धति से मतलब उपयुक्त चारा प्रबंधन, उपयुक्त आवास, उचित समय पर परजीवी एवं कृमि नाशक दवाओं का उपयोग, समय पर टीकाकरण तथा जन्मोपरांत बच्चे की उचित देखभाल व पोषण प्रबंधों से है।

1) **भारत में प्रचलित बकरी की कुछ नस्लें**

क्र0 सं0	**मांस हेतु**	**दुग्ध एवं मांस दोनों आवश्यकताओं हेतु**
1	बीटल	जमुनापरी
2	ब्लैक बंगाल	बारबरी
3	मालाबारी	जखराना
4	गंजाम	सुरती

5	टेरेसा	सिरोही
6	गड्डी	ओस्मनाबादी
7	चेंगु	झालावाडी
8	चांगथांगी	गोहिलावाडी

स्रोत - पंजीकृत बकरी की नस्ले, भाकृअप- राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो एवं अन्य स्रोत

2) बकरी पालन हेतु आवास प्रबधन

2.1 आवास हेतु कुछ उपयोगी तथ्य

- बकरियों से अधिकतम उत्पादन क्षमता प्राप्त करने के लिऐ पशु आवास का प्रावधान कम लागत सामाग्री के साथ किया जाना चाहिए।
- जल के भराव को रोकने के लिऐ ऊँची सतह वाले स्थल का चुनाव बकरी आवास के लिए करना चाहिए।
- बकरी शेड के आस पास पेड-पौधे उगाये जा सकते है जो कि बढ रही बकरियों के लिए चारे के स्रोत के रूप मे कार्य करेगा।
- स्वच्छ एवं ताजे पानी की उपलब्धता हमेशा रहनी चाहिए।
- बकरियों का शेड हवादार होना चाहिए।
- शेड की दीवारे किसी भी तरह की दरारों व छेद से रहित होनी चाहिए।
- शेड की मंजिल या छत दृढ होने के साथ-साथ उसमे पानी सोखने की क्षमता भी होनी चाहिए। (इसके लिऐ ऐजबेस्टास की छत अच्छी रहती है)
- शेड बनाते समय फर्श से छत की ऊँचाई कम से कम 6 फीट की रखें।
- सस्ती लागत और स्थायित्व की वजह से फूस की छत सबसे अनुकूल होती है।

2.2 बकरी के आवास का मापदंड (स्रोत - http://agritech.tnau.ac.in)

क्र० सँ०	आयु	ढका छेत्र (वर्ग मीटर)	खुला छेत्र (वर्ग मीटर)
01	03 महीने तक	0.2 – 0.25	0.4 – 0.5
02	03 से 06 महीने तक	0.5 – 0.75	1.0 – 1.5
03	06 से 12 महीने तक	0.75 – 1.0	1.5 – 2.0
04	वयस्क बकरी	1.5	3.0

05	बकरा /ग्याभिन बकरी/दूध देने वाली बकरी	1.5 – 2.0	3.0 – 4.0

3) बकरियों का पोषण प्रबंधन

बकरी पालन में पोषण का बहुत अधिक महत्व है। बकरियों को उनकी उपयोगिता एवं शारीरिक आवश्यकताओं के अनुसार ही भोजन उपलब्ध करना चाहिए। बकरी पालन हेतु उपयुक्त चारे को तीन भागो में विभाजित किया गया है जैसे - हरा चारा, भूसा एवं दाना।

हरे चारे को पुनः तीन भागो में वर्गीकृत किया गया है, जैसे - **फली (दलहनीय) चारा** जैसे की बरसीम, लोबिआ, लूसर्न इत्यादि, **अनाज (अदलहनीय) चारा** अर्थात ज्वार, बाजरा, मक्का एवं पेड़ों की पत्तियाँ जैसे नीम, पीपल, बरगद, सुबबूल एवं सहिजन।

3.1 वयस्क बकरी का पोषण प्रबंधन

ऐसी बकरियाँ जो वयस्क है और क्षेत्र में हरे चारे की पर्याप्त उपलब्धता है तो दाने की कोई विशेष जरूरत नहीं होती परन्तु अन्य स्थितियों में १५० से ३५० ग्राम दाना प्रति बकरी प्रति दिन के हिसाब से उपयुक्त रहता है

3.2 गर्भावस्था के दौरान पोषण प्रबंधन

गर्भावस्था के शुरूआती चार महीनो में ५ किलोग्राम हरा चारा (२ किलोग्राम फली चारा + २ किलोग्राम अनाज चारा + १ किलो हरी पत्तियाँ) साथ में २००- २५० ग्राम दाना प्रति बकरी प्रति दिन सर्वोत्तम होता है। हालाँकि इस बात का ध्यान रखना चाहिए की गर्भकाल के आख़िरी महीने में बच्चे का विकास बहुत तीव्र गति से होता है अतः थोड़ा थोड़ा चारा दिन में कई बार देना चाहिए साथ ही साथ पानी की उपलब्धता पूरे समय सुनिश्चित करनी चाहिए। इस क्रम में बकरी को १- २ किलोग्राम हराचारा (१ किलोग्राम फली चारा + १ किलोग्राम अनाज चारा/पत्तियाँ) हर दो से तीन घंटे के अंतराल में देना चाहिए। इसके अतिरिक्त सुबह एवं शाम को भूसे की सानी, ३०० ग्राम दाने के साथ देना चाहिए।

3.3 दुधारू बकरी का पोषण प्रबंधन

1. 6-8 घंन्टे चराना़ + १ किलो दाना, आधा से १ किलो भूसे की सानी के साथ + दुग्ध उत्पादन की आधी मात्रा में दाना (उदहारण के लिए यदि बकरी पूरे दिन में ५०० मिली लीटर दुग्ध उत्पादन करती है तो उसे २५० ग्राम अतिरिक्त दाना प्रति बकरी प्रति दिन) देना चाहिए

2. चरागाह की उपलब्धता न होने पर २०० ग्राम साइलेज + १ कि० ग्रा० दाना, आधा से १ किलो भूसे की सानी के साथ + १ कि० ग्रा० पेड़ो की पत्तियाँ + दुग्ध उत्पादन की आधी मात्रा में दाना। प्रति बकरी प्रति दिन।

विशेष - चारे का उपर्युक्त में से कोई भी तरीका अपनाये परन्तु प्रति बकरी दो चाय के चम्मच बराबर खनिज लवण मिश्रण चारे के साथ जरूर मिश्रित करें। खनिज लवण न सिर्फ निर्बाध दुग्ध उत्पादन के लिए आवश्यक है अपितु पशु की प्रजनन प्रक्रिया के निर्बाध रूप से संचालन के लिए भी नितांत आवश्यक है।

3.4 बकरे का पोषण प्रबंधन

६-८ घंटे चराना + १२५० ग्राम दाना १ किलो ग्राम भूसे की सानी के साथ + १ चाय के चम्मच बराबर खनिज लवण मिश्रण।

3.5 बच्चे के जन्म से ९० दिनों का चारा प्रबंधन

आयु (दिनों में)	बकरी का दूध	क्रीप चारा	हरा चारा
१	कोलोस्ट्रम ५०- ५० मिली लीटर दिन में ६ बार	----------	----------
२ से ७	५०- ५० मिली लीटर दूध दिन में ६ बार	----------	----------
७ से १४	१००- १०० मिली लीटर दूध दिन में ४ बार	----------	----------
१५ से ३०	१००- १०० मिली लीटर दूध दिन में ४ बार	अल्प मात्रा में (५० ग्राम)	अल्प मात्रा में
३१ से ६०	----------	१०० से २०० ग्राम	२ से ४ घंटे चराना
६१ से ९०	----------	२०० से ४०० ग्राम	४ घंटे से ज्यादा चराना

विशेष - उपर्युक्त श्रेणियों में लिखित चारे की विभिन्न मात्राएँ लेखक द्वारा, http://agritech.tnau.ac.in एवं विभिन्न सफलता पूर्वक संचालित बकरी फार्मो में दी जाने वाले चारे की मात्राओ से संकलित की गयी हैं।

4) बकरियों का स्वास्थ्य प्रबंधन

बकरियों के स्वास्थ्य प्रबंधन के मुख्य घटक हैं टीकाकरण एवं परजीवी उन्मूलन। सामान्यतः बकरियों में रोग प्रतिरोधक क्षमता अन्य पशुओ की तुलना में अधिक होती है लेकिन कुछ रोगों के प्रति टीकाकरण बहुत जरूरी होता है जिसकी अनुसूची निम्न प्रकार है।

4.1 बकरियों में टीकाकरण कार्यक्रम

महीना	रोग के लिए टीका	वयस्क बकरी	६ से १२ माह का बकरी का बच्चा	विशेष टिप्पणी
मार्च	गला घोटू	५ मि० ली० खाल के	२.५ मि० ली० खाल	हर साल दुहराएं

		नीचे	के नीचे	
मई	एन्टेरोटोक्सिमिआ	५ मि० ली० खाल के नीचे	२.५ मि० ली० खाल के नीचे	
मई	खुरपका मुँहपका	५ मि० ली० खाल के नीचे	५ मि० ली० खाल के नीचे	
जुलाई	ब्लैक क्वार्टर	५ मि० ली० खाल के नीचे	२.५ मि० ली० खाल के नीचे	
अगस्त	खुरपका मुँहपका	५ मि० ली० खाल के नीचे	०.५ मि० ली० खाल के नीचे	हर छह माह में दुहराएं
सितम्बर	एन्टेरोटोक्सिमिआ	५ मि० ली० खाल के नीचे	२.५ मि० ली० खाल के नीचे	

स्रोत - Livestock Vaccination and Health Record Book. Pp-16. Debojyoti Borkotoky and Raj K. Singh, कृषि विज्ञान केंद्र, फेक. नागालैंड

4.2 बकरियों में बाह्य एवं अन्तः परजीवी नाशक औषधियों का प्रयोग

बकरियों में बाह्य एवं अन्तः परजीवी (कृमि) नाशक औषधियों का प्रयोग नितांत आवश्यक है। ऐसा न करने पर धीरे-धीरे शरीर में परिजीवियो की संख्या बढ़ जाती है। ये परजीवी शरीर के अंदर या बाहर चिपक कर खून चूसते है जिससे पशु में प्रारम्भ में रक्ताल्पता होती है एवं पशु तनाव ग्रस्त हो जाता है तथा बाद में उसकी उत्पादन एवं प्रजनन क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। औषधियों का प्रयोग इस प्रकार है।

4.2.1 अंतः परजीवी (कृमि) नाशक औषधियों की प्रयोग

1) पहली कृमि नाशक औषधि १ या २ माह के बच्चे को पिलानी चाहिए उसके उपरांत हर तीन महीने में दवा देनी चाहिए जब तक की बच्चा एक वर्ष की आयु का ना हो जाए।

2) वयस्क बकरियों को ६ माह के अंतराल पर (मुख्यतः मार्च एवं अक्टूबर) खिलानी या पिलानी चाहिए।

विशेष - औषधि पिलाते समय इस बात का विशेष ध्यान देवे की दवा श्वास नाली में ना जाए। इसके लिए दवा धीरे धीरे व थोड़ी थोड़ी मात्रा में मुँह के किनारे से पिलाएँ या पशु चिकित्सक/ पशु औषधिक/पशुधन सहायक की सहायता लें।

4.2.2 बाह्य परजीवी नाशक औषधियों की प्रयोग प्रक्रिया

१) खाल के नीचे लगने वाले इंजेक्शन का प्रयोग किया जा सकता है इसकी विशेषता ये है की यह बाह्य एवं अन्तः परजीवी दोनों से छुटकारा दिलाता है।

२) कुछ दवाइयां जिन्हे पानी में घोलकर पशु को नहलाया जाता है, का उपयोग किया जा सकता है। परन्तु यहाँ विशेष ध्यान देना चाहिए कि पशु को नहलाने के पहले उसका मुँह बांध दें ताकि वह अपनी गीले शरीर को न चाटे। मुँह को शरीर सूखने के बाद खोलना चाहिए

विशेष - पशुपालक इन दवाइयों का चयन स्वयं ना करें , इसके लिए पशु चिकित्सक से परामर्श जरूर लेवे।

5 बकरियों में प्रजनन प्रबंधन

बकरी पालन व्यवसाय में अधिक लाभ बकरियों की प्रजनन क्षमता पर निर्भर करता है इसलिए हमेशा ऐसी नस्ल का चुनाव करना चाहिए जिनमे जुडवाँ या एक ही गर्भ में तीन बच्चे देने की प्रवृत्ति हो जैसे की जमुनापारी इत्यादि। बकरियां साल भर हर २१ दिनों में गर्मी में आती है लेकिन अनुकूल यह है की उन्हें साल में दो बार मतलब अप्रैल-मई एवं सितम्बर-अक्टूबर महीनों में ग्याभिन कराया जाये जिससे वो क्रमशः अक्टूबर-नवम्बर तथा फरवरी-मार्च महीनों में बच्चों को जन्म दें। ऐसा समय माँ के स्वास्थ्य, दुग्ध उत्पादन एवं बच्चे के शारीरिक वृद्धि के लिए उपयुक्त रहता हैं

प्रजनन के लिए उपयुक्त नस्ल का चुनाव भौगोलिक स्थिति एवं इस बात पर निर्भर करता है की बकरी पालन का मुख्य उद्देश्य केवल मांस के लिए है या फिर दूध और मांस दोनों के लिए है। इसलिए किसान को ऊपर तालिका में दी हुई नस्लों को चुनना चाहिए।

सारांश

आवश्यक प्रबंधन के अभाव में बकरियों की मृत्युदर लगभग ३० से ५० प्रतिशत तथा उनकी उत्पादकता आधी से लेकर दो तिहाई (५० तो ७५%) तक देखी गई है जो बहुत अधिक है जिससे बकरी पालन घाटे का सबब बन जाता है। हालाँकि वैज्ञानिक पद्धति से पोषण प्रबंधन, उन्नत नस्ल की बकरियों के चयन, उचित स्वस्थ्य प्रबन्धन तथा अच्छी विपणन तकनीकी अपनाने से बकरियो की उत्पादन क्षमता को डेढ़ से दो गुना तक बढ़ाया जा सकता है।